ओम्

प्रैस समाचार **दिनांक 30 मई, 2014**

-गुरूकुल पौन्धा देहरादून का तीन दिवसीय 14हवां वार्षिकोत्सव आरम्भ-

'ज्ञान, कर्म व भक्ति को जानना आवश्यक है : डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री'

देहरादून 30 मई। गुरूकुल पौन्धा, देहरादून का 3 दिवसीय चौदहवां वार्षिकोत्सव आज धूमधाम व श्रद्धापूर्वक वातावरण में आरम्भ हुआ। प्रातः 7:00 बजे यजुर्वेद पारायण यज्ञ डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ जिसमें अनेक वृहत यज्ञकुण्डों में यजमानों ने शुद्ध ओषधियुक्त हव्य द्रव्यों व गोघृत से आहुतियां दी। यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने किया जिससे छहों दिशाओं का वातावरण सुगन्धित हो गया। यज्ञ के पश्चात भजनों का कार्यक्रम हुआ जिसके पश्चात अमेठी से पधारे आर्य जगत के शीर्षस्थ वैदिक विद्वान डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने प्रवचन किया। उन्होंने हिन्दी साहित्य के प्रमुख विद्वान आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल का उल्लेख कर उनकी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' से ज्ञान, कर्म व भक्ति पर उनके विचारों को प्रस्तुत किया और महर्षि दयानन्द के विचारों से उनकी तुलना की। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद ज्ञान का, यजुर्वेद कर्म का और सामवेद उपासना का वेद है। अर्थववेद विज्ञान का वेद है। उन्होंने ज्ञान, कर्म व उपासना पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि महाभारत पर आकर वेदों के सत्य ज्ञान व उसके अध्ययन की परम्परा अवरूद्ध हो गई थी, उसे ऋषि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी में पुनः आरम्भ किया।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

आयोजन का दूसरा सत्र पूर्वान्ह 10:30 बजे से हुआ जिसमें पहले भजन हुए व उसके बाद राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ। सम्मेलन को पं. सत्यपाल सरल, प्रो. नवदीप कुमार, डा. गजेन्द्र पण्डा, अहमदाबाद तथा डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई ने सम्बोधित किया। सम्मेलन में यजुर्वेद, सामवेद व अर्थवेद का काव्यानुवाद करने वाले व अनेक विषयों पर काव्य-ग्रन्थों के रचयिता श्री वीरेन्द्र कुमार राजपूत ने अपनी कविता को गाकर प्रस्तुत किया। वन्दे मातरम का उल्लेख कर प्रो. नवदीप कुमार ने बताया कि इसका उच्चारण कर हमारे सैकड़ों व लाखों क्रान्तिकारियों ने अपने बलिदान दिये हैं। हैदराबार आर्य सत्याग्रह का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे श्री रामचन्द्र राव 'वन्देमातरम' ने इस सत्याग्रह में जब कोड़ों की सजा मिलने पर कोड़ खाये तो वह प्रत्येक कोड़े पर वन्देमातरम बोलते थे। श्री सत्यपाल सरल ने तीन भजन सुनायें और देश रक्षा के बारे में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये। डा. गजेन्द्र कुमार पण्डा, अहमदाबाद ने अपना व्याख्यान अत्यन्त सरल व मधुर संस्कृत भाषा में दिया। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्यों को जीवन में तीन प्रकार के व्यक्तियों से मिलना चाहिये। पहला जो सात्विक दान करता हो, दूसरा जो अहिंसा का पालन करता हो तथा तीसरा जो ईश्वर का ध्यान रखता हो। उन्होंने कहा कि ऐसे व्यक्तियों की संगति से व्यक्ति का निर्माण होता है। विद्वान वक्ता ने बताया कि गुरू के द्वारा विद्या का सात्विक दान किया जाता है। उन्होंने दोहराया कि सात्विक दान करने वालों से बार-बार मिलना चाहिये। आगे उन्होंने कहा कि अहिंसा का पालन करने वालों से बार-बार मिलना चाहिये और उनका अनुसरण करना चाहिये। ज्ञानियों का अनुकरण करने की उन्होंने प्रेरणा दी। डा. सोमदेव शास्त्री जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित स्वदेशीय राज्य की चर्चा की और उनके भक्त व सहयोगी **''श्यामजी कृष्ण वर्मा''** के क्रान्तिकारी जीवन व कार्यों पर सारगर्भित प्रकाश डाला। सारा कार्यक्रम बहुत ही श्रद्धा से पूर्ण वातावरण में चला एवं सम्पन्न हुआ। गुरूकुल के आचार्य डा. धनंजय आर्य ने महर्षि दयानन्द प्रदर्शित संस्कृत पठन-पाठन की आर्ष शिक्षा पद्धति की चर्चा की और उसे उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने के लिए किए गए सफल प्रयासों पर प्रकाश डाला। आयोजन में अपरान्ह 3:30 बजे से पुनः सायंकालीन यज्ञ सम्पन्न कर अनन्तर भजन व प्रवचन के कार्यक्रम हुए। सामूहिक सन्ध्या भी की गई। बड़ी संख्या पुस्तक व कर्मकाण्ड की सामग्री के विक्रताओं ने कार्यक्रम स्थल के बाहर अपने स्टाल लगाये हुए थे। **गुरूकुल के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की उपस्थिति सभी आगन्तुकों व श्रोताओं को आकर्षण का केन्द्र थी व श्रद्धालुओं को वैदिक धर्म व संस्कृति को प्रचारित व स्वयं के जीवन में धारण करने के लिए प्रेरित व प्रभावित कर रही थी।**

गुरूकुल में ध्वाजारोहण का दृश्य

-मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून।